# सृजन

अभी कुछ दिनो पहले अनुसंधान से यह पता चला है कि सृजन मे कम शक्ति का व्यय होता है और विध्वंस मे ज्यादा शरीरिक शक्ति का अपव्यय होता है। जैसा प्रत्यक्ष है कि लड़ाई मे विध्वंस और शांति मे सर्जन निहित है । इसलिए आज से यह हम व्रत ले सकते हैं कि भारत सरकार सबकी है न कि भाजप की या कांग्रेस की या मिली जुली जो भी हो हमारी है । क्यकि जिस व्यक्ति ने जनतंत्र की परिभाषा को दिया था उसने यह भी कहा था कि हमे वैसी ही सरकार मिलती है जैसी हमारी मनोव्रती है । यदि हम एक उंगली सरकार पर उठाते है तीन उंगलिया हमारे उपर उठ जाती है ।

जब यह तय हो ही गया है कि सरकार हम सबकी है, हमारी भाग्य विधाता है तो हमे उसे पूरा सहयोग देना होगा ताकि सरकार अपना कार्य ठीक ठाक से कर पाए । और सर्व जन की ईच्छाओ को पूर्ण कर पाए । यदि ये अपने कार्य मे असफल हो तो हम उनको अपने सत्र या अगले सत्र मे मे आने ही न दे उस पद कर । प्रजातंत्र मे जनता ही वोटो से अपने भाग्य की विधाता है ।

हमने अब तक विध्वंसात्मक सृजन ही किया है पिछले छः दशको मे । हर काम मे हर तरफ सरकारी बुराई करके हमे कुछ हासिल नही हुआ है । पर एक ओर शिकायतो का पुलन्दा इतना भारी हो गया है कि उसे हम देशवासी मिलकर भी नही उठा पाते है और सुनने सुनाने का समय हम मे से किसी के पास भी नहीं है । जब हमे प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, मंत्री या बिधायक की अलोचना करते है तो यह भूल जाते है कि वे तो मात्र मुखौटा है जनतंत्र का असली खलनायक तो बिगड़ा हुआ सरकारी तंत्र है जो मुझे यह कहते हुये शर्म आ रही है कि यह हमे विरासत मे मिला था ओर हमने उसे बिना सुधार किये ही अपना लिया जिसे अब सुधारने मे बहुत समय लग रहा है । हम भूल गये थे कि यह तंत्र हमे चूसने के लिये बना था जनता की सेवा के लिये नही बना था ताकि अंग्रेज़ी शासन व उनकी जनता अमीर हो जाय । उसी अंदाज़ मे हमने अंग्रेजी शासन की शिक्षा पध्दति को भी स्वीकार कर लिया जिसमे जनता के प्रति कोई जबाबदेही नही है बिकल्पो का प्रबिधान नही है सोचने की मौलिकता नही है । जनता की समस्याओ को सुलझाने की इच्छा नही है, संगठन को वढावा देने को तदबीर नही है ।

इस सब मे विध्वंस की ही भावना प्रधान रहती है । सृजन तक पहुँचते पहुँचते शक्ति का ह्रास हो जाता है । इस तरह हम अपनी अधिकतर शक्ति का अपव्यय कर रहे है । अब हमको सृजनात्मक विध्वंस करना होगा । इसका मतलब यह है कि हमे अपनी शक्ति सृजन मे अधिक और विध्वंस मे कम लगानी होगी । जैसे अगर हमे एक बड़ी अवान्छित इमारत को गिराना हो तो उसमे ऐसी जगह डायनामाइट लगाया जाता है कि इमारत तो गिर जाय पर आस पास के सृजन को हानि न पहुँचे । इसी तरह हमे यह सोचना पड़ेगा कि कैसे और किस तरह सरकारी तंत्र को बदला जाय ताकि यह जनता पर राज करने के बजाय उसकी सेवा करें ।

इसके लिये प्रजातंत्र को, प्रशासन तंत्र, पर हावी होना होगा । उसे बदनले पर मजबूर करना पड़ेगा ।सवाल उठता है कहाँ से शुरुआत की जाये । इसके लिये जो 70 करोड़ जनता जो कमी वेशी ईमानदार है इसे संगठित करना व 31 करोड़ बेईमान के संगठनो को विघटित करना होगा । हम अपना अधिकांश समय समस्याओं को सुलझाने मे न लगाकर उनके मुखौटो पर वहुत समय तक चर्चा करते रहते है । जबकि मुखौटे न तो समस्याओ का कारण है न ही उनके पास समस्या को हटाने का बिकल्प होता है । सरकारी तंत्र पर ध्यान दे यह बात आपको खुद समझ मे आ जाएगी ।

इस सतही तौर पर न ढूंढकर मूल कारणो को पर ध्यान दें तभी समस्याएं हल हो पाएगीं । विकेन्द्रीकरण इसका महा मंत्र है । सोच सर्वभौमिक होनी चाहिये पर स्थानिये स्तर पर कार्य करने की घूट होनी चाहिये । इस सृजनात्मक विध्वंस की नीवं भरोसे पर आधरित हो । इसकी शुरुआत अपस मे एक दूसरे पर भरोसे से होगी न कि शक से जो आज हमारे बीच बना हूआ है । हाँ कुर्सी पर बैठे लोगो को तकलीफ होगी परन्तु जनता के वल को अपनी तरफ खीचने की इच्छा से जनता के प्रति उनका कर्तव्य बोध जागेगा । हमार पूरा सरकारी तंत्र अविश्वास की नींव पर खड़ा है जबकि अविश्वास मे किसी की जीत नही होती । और हम सृजनात्मक कार्य समूहिक ढ़ग से करने के अभयस्त नही है ।

अब हम एक ज्वलंत समास्या को ले ले जो हममें से अधिकांश लोगो को झेलनी पड़ती है मुकदमो की है । समय पर न्याय न मिलें तो वह अन्याय के समान है इसका कारण जज या वकील नही वरन बिगड़ा हुआ तंत्र है जो शक की नींव पर रचा गया था, असमानता के गारे से उसकी चिनाई हुई थी । न्याय की दुहाई देने के बावजूद निहित स्वार्थ के कारण न्याय की आत्मा का उस तंत्र मे अभाव है इसे हम भरोसे की नींव पर जन सधारण के हित मे अब बदल सकते है । जब तक दोष सवित न हो जाय जनता का हर आदमी निर्दोष माना जाय यहाँ से शुरु किया जाए । पर आज यह स्थिति है कि आपको यह साबित करना पड़ता है कि आप कौन है अपके कहने तक मे विश्वास नही किया जाता है जब तक आपका नाम बाप का नाम क्या है क्हा के रहने बाले है इत्यादि. ।

दूसरी समास्या शिक्षा प्रणाली की है जिसके सम्बन्ध मे सभी एक राय है कि यह भारत के लिये उपयोगी नही है । मूल कारण यह है कि यह प्रणाली प्रोत्साहन पर आधारित न होकर प्रताड़ना पर आधारित है ।

तीसरी समास्या जो एक प्रश्न के रुप मे, मै आपके सामने रखना चाहता हूँ । क्या हम गणतंत्र मे रहते है ? क्योकि हमारे देश औपचारिक नाम भारतीय गणतंत्र है । यदि अपने मेरे सवाल का, हाँ मे उत्तर दिया है तो एक विधायक जिसे जनता चुनती है उसके अधिकार एक जिलाअधीकारी से कम क्यो जिसे मनोनीत किया जाता है, उससे कम क्यो होते है । जनता इतनी बेवकूफ है कि उसका चुना प्रतिनिधी बेकार है । फिर मेयर के होते जिला अधिकारी की क्या आवश्यकता है,

इंग्लैडं मे देख ले, अमरीका मे देख ले, और देशो मे देश ले ऐसा कोई प्रबिधान नही है। यह उनिबेशबादी व्यवस्था थी जो उनके लिये जरुरी थी अब उसकी कोई उपयोगिता नही है वरन एक अढंगा है।
अब गन्दगी की समस्या को ही लें । गन्दगी हम करेगे पर सफाई सरकार करेगी । यह दृष्टीकोण रखकर कर हमने क्या इस मास्या को हल कर लिया अब तक और कब तक सरकार के सहारे बैठे रहेगें । हम तंत्र की तरफ ध्यान दे तो बहुत ही जल्दी हमे समझ आ जायेगा कि खाना पूरी के लिये हर स्तर पर सफाई बिभाग है पर सफाई हो पायी है उन गये गुजरे तरीको से हमारे देश मे व जनता को कभी सन्तुष्टी नही मिली है । क्यो न यह काम जनता के उपर ही छोड़ दिया जाय और जनता बैहतर तरौको से यह जुम्मेदारी अपने उपर ले ले । ज्योकि सरकारी तंत्र जनसख्या की दुहाई दे कर अपनी असमर्थता को प्रकट करता आ रहा है, इस तरहे के कामो को जनता अपने उपर लेगी तो हमे अपने आप सहयोग से काम करना भी अयेगा और हमारी एक शिकायत की सख्यां मे कमी हो जायेगी सरकार के विरुध ।एक कड़ी कम हो जायेगी समस्याओ को सुलझाने मे और आप देखेगे की स्मभावनाए कितनी बढ जायेगी, नई नई नौकरियां भी पैदा होगी।
मुम्बई मे एक कम्पनी ने कूड़े से खाद बनाकर उससे पैसा कमाया तो, वहाँ के भंगियो ने उसका बिरोध किया, क्यो भई हर शहर मे एसा क्यो नही हो सकता क्योकि हमारी सफाई आज भंगी जाति के पास धरोहर मे गिरवी है क्या ? हमने देहरादून मे कई कालोनियों को साफ देखा है जो अपने कूड़े को खुद एकत्र करके खाद बनाते है ओर उससे खर्चा भी चलता है और सफाई भी । पर इसके लिये जो सफाई चाहते है उनको हर महीने कुछ अतिरिक्त रुपये देने होते है गृह कर के अलावा इस सँस्था की यग स्कीम सफलतापूवर्क चल रही है ।
हम लोगो ने अपनी कमियो को नकारने का एक और तरीका अपनाया है कि वह अमरीका को दोषी ठहराकर अमरीका तो आयेगा नही अपनी सफाई देने और हमारी समस्याऐ सुलझेगी नही । तो सुने अमरीका मे हर छोटे से छोटे हे मे 30 /40 रेडियो स्टेशन होते है और शहर की आवादी 5/10 लाख होती है यह है तरीका नई नई नौकरियो को पैदा करने का न कि सरकारी तंत्र एक छोटे से गांव बाले का रडियो स्टेशन उठाकर ले जाय क्योकि उसने 500 रुपये मे FM रेडियो स्टेशन बना लिया पर तंत्र की परमीशन नही ली थी । क्योकि उसके पास कइे लाख रुपये नही थे जो तंत्र के रखवालो की जेब मे चले जाते । हमे पता नही कब यह मौका मिलेगा अपने देश मे की हम कोई भी काम को करने मे अपनी तरीके से स्वतंत्र होगे । क्या असफलता का डर हमारे बिकास मे वाधक है ? हमे अपनी समूहिक मनः स्त्रिति मे बदलाव लाना होगा । हमे भ्रम व वास्तिकता मे अन्तर को समझना होगा बरन हम हर दूषित विचार को जो हमे कुछ करने से रोकता है सही मान लेगें । हमे सामूहिक तौर पर अपने विरोधियो के साथ कंधे से कंधा मिला कर काम करना होगा ताकि हम अपनी कमियो के उपर विजय पा सकेगे । वरन समास्याये ज्यो की त्यो बनी रहेगी । जब तक हम व्यक्ति विशेष को या पार्टी को दोषी मानते रहेगे । इस तरह हमारे विकास का मानदन्ड एकाकी न होकर समूहिक होगा तभी हमारा समाज, व देश आगे बढेगा । जो भी समस्याए भारत मे है उनकी सूची बना ले और उतनी ही कमेटिया बना ले ताकि वह सब समास्याए एक साथ हर क्षेत्र मे एक साथ हल हो जाय । भारत के विकास के विश्य मे हमारा एक मत होना बहूत आवश्यक है, तभी हम समास्याओ से लड़ पायेगे एक जुट होकर । बिरोध गलत मान्यताओ का करे दोषी कार्य प्रणाली का करे, व्यक्ति बिशेष का नही, सरकार की मदद करे, न कर सके तो कम से कम विरोध न करे, यदि आपके पास मान्य वेहतर तौर तरीके नही है, अन्यथा जहाँ तहाँ अड़गा न लगाये । लोगो को सही काम नियमानुसार करने मे मदद दे या नही तो नियमो को बदलने की, जी जान से कोशिश करें ।
इस बात मे मुझे कोई दम नही लगता है कि युवा बर्ग व अधैड़ बर्ग मे मतभेद है । शायद यह दोनो ही भारत की तरक्की चाहते है, युवा पीढी को चाहिए कि वह अपनी शक्ति का उपयोग सरकारी तंत्र को प्रश्नवाचक रचनात्मक, अलोचक की दृीष्ट से देखे क्या जरुरी है और क्या नही है । किसी भी समस्या का समाधान जब तक नही हो जाए बिकल्पो को सोचा जाय, कार्यविन्त किया जाए । गलतिया भी होगी, असफलताए भी अयेगी, निराशा भी होगी पर अंत मे विजय होने पर उल्हास होगा, उत्साह बढेगा और आशा से अधिक उन्नति होगी क्योकि हर असफलता से भी कुछ सीखने को ही मिलेगा ।
आज नौकरी के नाम पर अनगिनत युवक व युबतियां इंतजार मे बैठे रहते है, क्यो न बह उन युबक युवतियो को पढाये जो हर माह उन्हे पैसे शायद न दे सके, पर आगे चलकर उनकी सफलता मे साथी बनें व भागीदार बनें । अपना स्बयं का धन्धा करे, जो नैतिक रुप से ठीक हो । बहुत से ऐसे क्षेत्र है जो मुझे मालूम है आपको भी मालूम होगें जहाँ बहुत नये विचारो को जानने बालो की आवश्यकता है या नई सूचनाओं की । कम्पूटर साइंस व टेलीफून गांव मे ले जाए और उनको कृषी सम्बन्धी जानकारी दे और ग्राम उदयोगो से जोड़े । बैलो से चलने बाले संयत्रो या सौर ऊर्जा की सहायता से विजली बनाये और उसे घर घर वांटे, पैर से चलने बाले पम्प की जानकारी दे ताकि सिचाई का काम सुचारु रुप से चले । यह सब जानकारी किताबो से ले पर देने के बाद उनसे उसका उचित मूल्य ले । स्थानिये लोगो की बनाई बस्तुओ का इस्तेमाल कर और अधिक से अधिक उपभोक्ताओ के पास पहुचायें । भारत कम्पूटर प्रोगरामरो को निर्यात करने मे अग्रगणय है ,इनका अपने देश मे ही दैनिक आबश्यकताओ को सहज और सुलभ बनाने के लिये किया जाए । सरकार के सहारे बैठने से या मल्टीनेश्नल का बिरोध करने से ही कुछ हासिल नही होने का । ऐसे तरीके ईजाद करे ताकि कम लागत मे अच्छा माल तैय्यार कर सके जो घरेलू उपयोग मे या विदेशो मे खप सके । इसके लिये उत्पादन का मानदन्ड अन्तराष्ट्रीय स्तर का होना चाहिये । टकराव से ऊर्जा का अपव्यय होता है और सहयोग स शक्ति का सदुपयोग होता है ।
किसी भी समस्या का हल सिर्फ बातो से नही निकाला जा सकता है । परन्तु मिल बैठकर तर्क वितर्क करकर किसी मंजिल पर पहुँवने के लिये राह निकाली जा सकती है । उस राह पर फिर मिलकर सहयोग से चलना है । चाहे मंजिल दूर

हो तो भी पहला कदम उठाकर तभी दूसरा रखा जा सकता है। कदम से कदम वढाकर ही मंजिल तक पहुँजा जा सकता है । बीच मे रोढे आयेगें, बधाये भी आयेगी जो प्रकृतिक या मनुष्य से पैदा हुई हो सकती है परन्तु उन सबसे जूझना ही होगा । फिर तरीको मे बदलाव भी करना पड़ सकता है पर जरूरी है समस्या को सुलझाने का ज्ञान हमे पूरा हो और हमारी सारी ऊर्जा, लक्ष्य प्राप्ति मे लगी हो । साधनो का आभाव न हो और लगन की कमी न हो तो सफलता हमारे कदम चूमेगी ।

गरीब व अमीर मे अन्तर सिर्फ इतना होता है, कि गरीब अपनी आमदनी से ज्यादा खर्च करता है और पूंजी की आवश्यकता पर ब्याज़ देता है और अमीर अपनी जरुरतो को अपनी अमदनी मे कम रखकर बचत को दोबारा पूंजी निवेश करता है और उसको दोगुना या चार गुना कर लेता है । गरीबो की समस्याओ को कम करन के लिये हमे उन्हे बचत का व पूंजी निबेश के मूल सिध्दान्तो को सरल भाषा मे समझाना होगा, ताकि वह बेकार के अडम्बरो मे धन का अपव्यय न करे और अपनी आय को बढाबे ताकि जो हो रहा है उसका उल्टा होने लगे, उसकी दिशा बदली जा सके । शहर जो गाँवो को चूस रहे है यह काम गाँव कर पाये । शहरो से गाँवो मे जाने बाली प्रसाधन सामग्री की खपत पिछले दो सालो मे 700 करोड़ से बढकर 2300 करोड़ हो गई है । इससे पता चलता है कि गाँव कितना अधिक धन शहर चला जाता है पर शहर से गाँव मे जाने बाला धन इतनी तेजी से नही वढ रहा है तो गाँव तो और गरीब व खोखले होते ही जायेगें । इसके बिकल्प है जो गाँव के परिवेश मे ही उपलब्ध भी है, जो उन्हे सुझाये जा सकते है जैसे उन्हे ईधन की बचत करना सिखाए, क्योकि अधिकांश गाँवो मे वन की लकड़ी ही ईधन का स्रौत है तथा उसके अपव्यय से पर्याबरण को बहुत अधिक हानि हो रही है । गाँव बालो से मिलकर ईधन का कोई विकल्प ढूढा जाना बहुत जरुरी है । ऊर्जा ऊत्पादन के लिये कम खर्चे पर चलने बाले हवाई मिलो व सौर्य ऊर्जा का सहारा लेना बहुत आवश्यक है। जल को बचाना ही सिखा दे, साबून, तेल, पाऊडर, शैम्पू,टूथपेस्ट आदि के बिकल्प उन्हे बताये जो प्राकृतिक रुप मे सुलभ है और उनका उपयोग बहूत सरल है तथा अजकल शहरो तक मे बहुत लोकप्रिय हो रहा है । इस सूचना से उन्हे अवगत कराएं । दवाईयो को बिना जानकारी के न खाये उन पर खुद को आश्रित न बनाये । योग का ज्ञान व अभ्यास वढाये ताकि स्वयं को स्वास्थ सबल रख सके । उस तरह जव बचत करना आ जाय तो पूंजी निबेश के तौर तरीको से उन्हे अबगत कराये ताकि उन्हे भी आर्थिक सुरक्षा का अहसास हो, सबसे जरूरी है परिवार की आमदनी का जरिया एक से ज्यादा हो, सिर्फ कृषी पर ही आधारित न रहे। यह समझाये कि इन छोटी छोटी बचतो से क्या हो सकता है बूंद बूंद से मिलकर ही सागर बनता है । एक पैसे को बचाना भी उतना ही लाभकारी है जितना एक पैसे को बचाना । गाँव गाँव मे बेकरियां खोली जाए किससे सिर्फ शहर बाली बेकरिया ही मालदार न बने ।इन सब काम धन्धो से पैसा बचेगा जो हमारे ही पड़ोसी के उत्थान मे लगेगा । गाँव के बच्चो को दूध पिलाए, अच्छा पोष्टिक भोजन उपलब्ध कराए जिससे वे शरीरिक रुप से समर्थ बनें और खेती मे खपा करके उसे बढा सके । शहरो मे जब कम दूध पंहुचेगा तो शहर बालो को उसका उचित मूल्य देना होगा । जब गाँव की पैदा हुई चीजो की कीमत ज्यादा मिलेगी तो गाँवो मे समृध्दि आयेगी, उनकी शक्ति बढेगी,खुशहाली बढेगी । अभी क्या हो रहा है कि पानी की कमी के कारण दुर्लभ हरियाली पर पल रहे पशुओ का दूध आमदनी का एक मात्र जरिया होने के कारण अपने वच्चो को दूध के स्थान पर चाय का आदी बना रहे है और बहुत मुश्किलो से पैदा किया किया दूध दही व घी कम दामो मे शहरो मे बेचने जाते है । इससे इनकी आगे आने बाली पीढियां ते कमजोर हो ही रही है इसके अलावा अन्य किसी विकल्प न होने के आभाव मे, एक स्थान पर हरियाली खत्म होने की स्थिति मे अपने मवेशियो को लेकर या छोड़कर दूसरे स्थान पर जीविका कमाने के लिये जाना पड़ता है । ऐसी विषम स्थिति मे कौन विकास, सृजन, या समृध्दि की उम्मीद कर सकता है । समाजिक स्तर पर जागरुक व्यक्ति अगर इस विषय मे कुछ नये प्रयास नही करेगे तो कौन करेगा? इन समस्याओ को हम जनसख्यां की दुहाई देकर नही छोड़ सकते है ।

कुछ लोगो के अथक प्रयास के फलस्वरुप हमने एक गाँव मे अनाज का सहकारी गोदाम देखा जो आपातकाल मे प्रभावित परिवारो को कम दामो पर अनाज मुहैया करता है । जरुरत है ऐसे प्रयासो को दोहराने की हर गाँव मे, हर गाँव मे सहकारी संस्थाओ की जो गाँव बालो के सहयोग से बने । इसके सहयोग से नये रोजगार पैदा हो सकते है । हर गांव मे एक रुपया प्रति परिवार प्रति दिन वचत करे ग्रामकोष मे और इस धन का व्यय, ग्राम के उथ्थान मे किया जाय तो उस धन से गाँव के वच्चो को ही काम पर लगाया जाए । यह विषय बहुत विचारणीय है तथा संभव भी है । कोइ काम मुफ्त नही होता है । हर एक को अपने परिश्रम का उचित मूल्य मिलना ही चाहिये जाहे वह कितना छोटा या बड़ा काम हो । अपने गांव के लोग अपने लोगो के लिये करेगें तो उनमे र्दद होगा व सहानभूति होगी । अब यह काम सरकार करेगी तो वह काम अधिक मंहगा होगा या कभी हो ही नही, यदि धन की कमी हो गई सरकार के पास । काम होने की स्थिति मे यह कम से कम तीन गुना होगा । इस तरह आपके हाथ मे अपने देश की उन्नती की कुंजी है जो चाहे करे । जब हमारे पास साधनो की कमी है तो उन्हे दो तरीको से ही पैदा किया जा सकता है । कुछ त्याग करके, या संगठन की शक्ति से लगन के साथ एक दूसरे पर भरोसा करके सफलता हासिल की जा सकती है या दूसरो को भी कराई जा सकती है चाय काफी का व्यवसाय करने बाले मालिकों को अपने बहुत अमीर बना दिया, अब अपने बारे मे भी सोचिये और एक बात हमेशा याद रक्खे कि सबसे पहले अपने को दे अपनी मेहनत का फल यानि बचत करें ।

अब भारत जो एक गरीब देश कहलाता है उसकी दरिया दिली देखिए कि हम दुनिया की सारी सोने की खानो को चलाने का खर्चा देते हैं । हमारे अमीर लोग यूरोप अमरीका मे जाकर डालर खर्च करके व वहाँ विनियोग करके उन्हे और अमीर बनाने की होड़ मे लगे हुये है। आज भी हम अपना कच्चा माल ही जो खानो से निकलता है बाहार सस्ते दामो मे बेच रहै है जबकि हमारी जनता गरीब है । जापान चीन देखे उनके पास भू सम्पदा नही के बराबर है और आवादी भी कम

नही है पर वह लोग सरकार के सहारे नही बैठे है । देश के लोगो को अपनी सम्पदा की रक्षा खुद करनी होगी । अपने पूर्वजो की धरोर को सम्भाल के रक्खे व पर्यटको को सुविधाये देकर असीमित विदेशी मुद्रा कमा सकते है । हम स्वतंत्र हो गये है पर इस स्वतंत्रता को बरकरार रखने के लिय त्याग, पुरुषार्थि, दिमाग लगाने के वजाय सरकार का मुहँ हर बात मे देखते है । हम अपनी न दिखने बाली बेढियो से खुद को जकड़ रक्खा है । जब तक हम यह बेढियाँ नही तोड़ेंगे सरकार या पुलिस का भय नही छोड़ेगें देश के हित मे कुछ नही कर सकते है । गाँव के नवयुवक व नवयुवतियों के लिये जब तक गांव मे ही रोजगार मिले ऐसा प्रबन्ध नही करेगें देश की तरक्की नही हो सकती है । पानी जो शहरो मे आता है उसे शहर की मुनिसपैलिटयां वेचती है । यह पानी गाँवो से चुराया है पर उन्हे तो कोई मूल्य नही मिला, तो गाँव कैसे अमीर होगें । यह चोरी हमे रोकनी होगी । मल्टीनेशनल जब यहाँ व्यवसाय करने आये तो,वह जो भी प्रकृतिक सम्पदा का इस्तेमाल करे उन्हे उचित मुअवजा देना होगा जो वह अपने देश मे देते है । हर गांव मे सुरक्षा बाहिनी होनी चाहिये जो युवक युवतियो को अनुशासन व जिम्मेदारी सिखाएगी । और गांव की सुरक्षा भी । यह सब इस देश मे हो रहा है हमारा देखा हुआ है, पर जरुरत है कि हर गाँव मे एसा हो । हमारे हर लेख, कहानी मे जरुरत है मनोरंजन के अलावा एक सूचना को उभारने की और किसी भी माध्यम से सच्चाई का, उन नियमो का जिनसे उन्नति सम्भव है, सभी लोगो तक पहूंचाना होगा तभी देश लाभाविन्त होगा ।

देश के पढे लिखे बेरोजगार यह सूचना या जानकारी पहुचाने का करोवार कर सकते है उसके लिये फीस चार्ज करें । जो कम्पनिया पानी को बोतल मे भरकर बेचते है पर स्थानिये स्रोत्र को कुछ नही मिलता है कहीं कहीं सरकारी तंत्र के साथ मिलकर करोड़ो का पानी कोड़ियो के दामो मे मुहय्या करा देते उन कम्पनियो को, क्योकि गाँव का कोई संगठन नही है पढे लिखे लोग गाँवो मे जाकर इन नियमो की जानकारी लोगो को दे सकते है सरकार क्या है कैसे चलती है उसका ढ़ाचा क्या है उसमे हमारा क्या स्थान है जनता का । गाँव गाँव ने बुक बैंक खोले जाय ताकि न ज्ञान की कमी हो, न सूचना प्रसारण की । लोग अखबार मे खबर तो पढते है पर अपने मतलब की बात भी नोट नही करते । सूचना होना ही काफी नही है उस सूचना को कैसे प्रयोग मे लाया जाय, ताकि हम लाभवन्त हो, यह भी हमे सीखना होगा । अगर हम समस्याओ के बारे मे सोचते है तो उनके निदान के बारे मे भी कुछ कुछ जानते है । तो धैर्य, लगन, और पुरुषार्थि की कमी भी क्या साधनो की कमी वाली लिस्ट मे आनी चाहिये ? मेरे विचार मे तो हम असफलता की आशंका से डर कर साधन हीनता की दुहाई देने लगते है सबसे उपर सरकार को रख कर अपनी सामर्त्थ्य की इति श्री समझ लेते है । जब कि सम्भावनायें हो सकती है उन पर विचार ही नही किया है । सम्स्याये मात्र सरसरी तौर पर उन पर गौर करने से ही हल नही होती है उनके मूल मे जाना बहूत ही जरुरी है । जरुरत है तो उसका रास्ता भी जरुर होता है यह विश्वास कभी न छोड़े । हर व्यक्ति यदि अपने उदेश्य सामने रखकर रास्ता ढूंढे तो एक नही कई हल निकल सकते है । इसी तरह से समस्याये कम होगीं एक एक करके । किसको पहले करे यह विशय विचारणीय है पर यह निष्कर्ष निकलने मे सबका फायदा है वह है सफाई की समस्या का उन्मूलन । कैसे होगा हमे नही मालूम है । पर हम सव देशवासी भारत मे बैठे अमरीका की चालो को समझ सकते है । तो यह क्या कि अपने देश के हतकन्डो को हम क्यो नही समझ सकते है, उन हतकन्डो को जो देश मे सफाई नही होने दे रहे है। क्यो हमारे गाँव , कस्बो, या शहरो मे सफाई महकमो व जमादारो के बीच मे फसी पड़ी है इसका बिकल्प क्यो नही निकाल पा रहे है ।

अगर हम रास्ता ढूंढ भी लेते है तो एक दूरी तक चल कर बह रास्ता खो सा क्यों जाता है ? अगर सरकार से ही करवाना है तो पडिये उसके पीछे जब तक समस्या हल नही हो जाती छोडिये मत प्रयास, हालातो से समझौता मत कीजिये । साथ ही विचलित भी न हो तभी स्थित प्रज्ञ होकर हम अपने ध्येय की प्राप्ति कर सकेगें । नये तरीके सोचे जा सकते है कि झाड़ू से ही सफाई क्यो हो, पानी से ही सड़क क्यो साफ करे जबकि धूल से कीचड़ की समस्या ही बढेगी। क्यो न दबी हवा का प्रयोग कर धूल को वही एकत्रकर ले यह अधिक सुविधाजनक है, प्रभावशाली और स्वास्थ रक्षक भी हमरे लिये और सफाई करने बाले के लिये भी । क्या जरुरी है कि जमादार झाड़ू पंजे से ही कमोट साफ करे एक ऐसा ठेला बनाया जा सकता है उसमे कमप्रैसड हवा से चलने वाला पम्प लगा हो और एक लोहे का टेंक भी जो मल को एकत्र कर सकें । कोई न कोई करेगा यह नई नई चाजे ईजाद, और रोजगार जरुर बढ़ेगें ।

हम सब यदि संगठित होकर देश के हित मे शक्ति व दिमाग लगाये । इस प्रकार के विचार हर भारतीय के मन मे उठते है तो जरुरत है उनको एकत्र करके, संगठित होकर कार्यबिन्त करने की है । आशा और विश्वास के साथ हर व्यक्ति अपनी क्षमतानुसार प्रयास करे और किसी भी समस्या पर अपने हल को तौले, परखे पर जब एक निर्णय पर पहुंच जाय तो औरो के साथ उस निर्णय की चर्चा करे, और एकमत होकर उसके समाधान मे लग जाय तो कोई कारण नही की समस्या हल न हो, चाहे रास्ते बदलने पडे पर निश्चय नही बदलना है तभी हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगें ।

रश्मि उमेश रोहतगी

**Umesh Rashmi Rohatgi 24161 nilan Driv Novi MI 48375 USA Phone : (248) 471-5786 Web:www.rurohatgi.com, email:rurohatgi@yahoo.com**